संगीत के प्रचार प्रसार में रेडियो तथा टीवी की भूमिका

पूजा कश्यप[1]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि ''रेडियो में शक्ति देखता हूं।'' निःसन्देह यह बात सवतन्त्रता संग्राम के दौरान रेडियो के माध्यम से जनमानस में जागरूकता लाने के सम्बन्ध में कही गई थी लेकिन जनसंचार के यह माध्यम वर्षों से लोगों में जागरूकता लाने, उन्हें शिक्षित करने और उनका मनोरंजन करने की दिशा में कार्य कर रहे' हैं। रेडियो और टेलिविजन पर आरम्भ में सरकार का स्वामित्व था और ये दोनों माध्यम सरकार के अधीन कार्य करते थे लेकिन आज भारतवर्ष में निजीक्षेत्र में भी रेडियो के एफ.एम. चैनल और टी.बी. चैनल खुल रहे है। कई चैनल ऐसे हैं जो अपने कुल प्रसारण में से 90 प्रतिशत समय संगीत से सम्बन्धित कार्यक्रमों के प्रसारण को दे रहे हैं।

आज़ादी के बाद से हमारे देश में रेडियो और टेलिविजन के विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। आज के संदर्भ में यदि बात की जाए तो कैसेट,सीडी,डीवीडी तथा कई अन्य माध्यमों से लोग संगीत को सुन व देख रहे हैं लेकिन एक समय ऐसा भी था जब संगीत को सुनने व देखने के लिए लोग रेडियो तथा टीवी का ही प्रयोग किया करते थे। यदि हम रेडियो व टेलीवीज़न को ऐतिहासिक पृष्टभूमि में झांक कर देखें तो हमारे देश में रेडियो की शुरूआत 1930 के दशक, जबकि टेलीविज़न का आरम्भ 1960 के दशक से हुआ तथा सर्वप्रथम संगीत से सम्बन्धित कार्यक्रम ही प्रसारित किए जाने लगे। आकाशवाणी और दूरदर्शन के तीन मूल मंत्र–मनोरंजन, शिक्षा तथा जागरूकता में से आज भी लगभग 60 प्रतिशत समय मनोंरजन सम्बन्धी कार्यक्रमों के प्रसारण को मिल रहा हे। आकाशवाणी के दिल्ली स्थित केन्द्र के श्रोता अनुसंधान केन्द्र के सर्वेक्षण के अनुसार देश भर में श्रोता संगीत कार्यक्रमों को सुनने में सबसे अधिक रूचि लेते हैं और पुराने गीत व शास्त्रीय संगीत आज भी लोगों की पहली पसंद है।

आकाशवाणी शिमला के श्रोता अनुसंधान केन्द्र के सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचली लोक संगकीत पर आधारित कार्यक्रमों का जादू हमेशा की तरह आज भी श्रोताओं के सिर चढ़कर बोल रहा है। आशवाणी शिमला के कुल प्रसारण समय में से 30 प्रतिशत समय लोकसंगीत कार्यक्रमों को दिया जा रहा है जबकी संगीत कार्यक्रमों को लगभग 60 फीसदी समय मिल रहा है।

टेलिविजन के आगमन के बाद दर्शकों को एक और जहां संगीत सुनने का अवसर मिला वहीं अपने लोकप्रिय कलाकारों को टीवी स्क्रीन पर देखन का भी सुअवर प्राप्त हुआ। दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क सहित डी.डी. भारती व अन्य चैनलों पर संगीत से सम्बन्धित कार्यक्रमों के प्रसारणों को प्राथमिकता दी जाती है। देश के लगभग 90 फीसदी दूरदर्शन स्टूडियो को डिजिटल कर दिया गया है जिससे कार्यक्रमों के प्रसारण में अधिक गुणवता आई है, बच्चों,युवाओं और बुर्जुगों की रूचि के अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार के संगीत कार्यक्रमों दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित किए जाते हैं।

गत 15–20 वर्षों में भारतवर्ष में निजी टी.वी चैनलों के क्षेत्र में उल्लेखनीय क्रांति आई है और आज दर्शकों के लिए अनेकों चैनल उपलब्ध हैं। इन चैनलों पर संगीत से जुड़े कार्यक्रम लोगों की पहली पसंद बनते हैं। उदाहरण के तौर पर ज़ी टीवी पर प्रसारित होने वाले सारेगमप, डांस इण्डिया डांस, सोनी पर प्रसारित होने वाले इण्डियन आइडल जैसे कार्यक्रमों से लोगों को एक और जहां संगीत सुनने व देखने को मिलता है वहीं इससे संगीत का प्रचार–प्रसार भी होता हे। ऐस कार्यक्रमों से निश्चित रूप से संगीत को बढ़ावा मिलता है और लोग संगीत की बारीकियों से भी रूबरू होते हैं। इन कार्यक्रमों से हर उम्र के लोगों को छोटे परदे पर अपनी प्रतिभा दर्शाने का बेहतरीन मंच मिलता है तथा लोगों को घर बैठे अपने टीवी सैंटों पर चुनिन्दा कलाकरों को देख व सुन सकते हैं। यह सब टीवी चैनलों के माध्यम से ही संभव हो पाया है। तीन चार दशक पहले तक टीवी प्रसारण के क्षेत्र में इतना विकास नहीं हो पाया था और संगीत प्रतिभाओं को सुनने एवं देखने के लिए लोगों को बड़े–बड़े तथा समारोहों में जाना पड़ता था जो सभी के लिए संभव नहीं था। टी.वी प्रसारण के क्षेत्र में आज देश में आशातीत विकास हो गया है और प्रसारण के आधुनिक

1 पीएच0–डी0 शोध–छात्रा, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–5

उपकरणों की बदौलत ही आज किसी भी संगीत कार्यक्रम को उसी समय सीधे घर बैठे टी.वी सैटों पर देखा जा सकता है। यह टीवी चैनलों के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज अनेकों युवा संगीत की और आकर्षित हो रहे हे। और इसे कैरियर के रूप में चुन रहे हैं ऐसे में कहा जा सकता है कि प्रतिभाओं की खोज करने और उन्हें तराशने में भी टीवी चैनल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन, व नृत्य को बढ़ावा देने में रेडियो और टीवी का योगदान सबसे अधिक रहा है और आज भी ये दोनों इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गायन विधा में चाहे सुगम संगीत हो, लोक संगीत हो या फिर शास्त्रीय संगीत हो सभी को बढ़ावा देने और आज भी इनके माध्यम से हमें कई दुर्लभ गीत देखने व सुनने को मिलते हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर गायन, वादन व नृत्य का विशुद्ध रूप सुनने व देखने को मिलता है और यही इनकी विशेषता है। अंत में कहा जा सकता है कि रेडियो व टीवी तथा संगीत एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं और संगीत को लोकप्रिय बनाने व इसे बढ़ावा देने में इन माध्यमों ने सराहनीय कार्य किया है।